[illegible]

जनसत्ता 14 सितंबर, 2014: आज की बाजारीकृत व्यवस्था में नएपन के नाम पर मनगढ़ंत लिखने की मानो होड़-सी लगी है। सर्वेक्षण और साक्ष्यों के जरिए साहित्य को समृद्ध करने वाली पुस्तकें कम ही नजर आती हैं। ऐसे में सत्यकेतु सांकृत की पुस्तक हिंदी कथा साहित्य: एक दृष्टि इस दिशा में संक्षिप्त, लेकिन मुकम्मल प्रयास है।

इस पुस्तक का पहला अध्याय 1975 से लेकर 2000 तक के उपन्यासों के व्यापक फलक को समेटता है। इतने बड़े फलक को आलोचक ने जिस तरह बांधने का काम किया है, वह निश्चय ही बहुत मुश्किल भरा रहा होगा। इसके लिए उन्होंने तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों को लगभग आठ पृष्ठों में बताया है। फिर इन बदलती परिस्थितियों में उपन्यासकारों का अपनी समकालीन प्रवृत्तियों के साथ सीधा साक्षात्कार पेश किया गया है। यह इसलिए भी जरूरी हो जाता है कि किसी रचना का सही मूल्यांकन उसे उसकी समकालीन प्रवृत्तियों के बरक्स रख कर ही किया जा सकता है। साहित्यिक दशा-दिशा प्रवृत्तियों के अनुरूप कैसे ढलती है, इससे सत्यकेतुजी भली-भांति परिचित हैं, इसलिए उन्होंने सर्वेक्षण के अलग-अलग ढांचों का बखूबी इस्तेमाल किया है।

पुस्तक का दूसरा अध्याय माखनलाल चतुर्वेदी की गद्य भाषा पर है, जिसका आधार 'साहित्य देवता' को बनाया गया है। इसमें चतुर्वेदीजी की गद्य भाषा की पड़ताल के लिए सत्यकेतुजी ने भाषा और शैली के सभी उपकरणों का प्रयोग किया है। ध्वनिरूपक, शब्द रूपक, अर्थ रूपक और वाक्यात्मक शैली के सभी विभागों का खुलासा करते हुए एक-एक विभाग को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया गया है। चतुर्वेदीजी की गद्य भाषा की लयात्मकता पर विशेष बल देते हुए वे इसे उनकी गद्य शैली की प्रमुख पहचान मानते हैं। भाषा की यह पड़ताल कितनी बारीक और शोधपरक है, इसका अनुमान पुस्तक की इस पंक्ति से ही लग जाता है कि 'गणित की भाषा का प्रयोग करें तो उनके संज्ञा और विशेषण पदों का 56 प्रतिशत तत्सम, 32.5 प्रतिशत तद्भव और 11.5 प्रतिशत विदेशज होता है'। इसी प्रकार प्रत्यय, भाव निर्मिति, अलंकार, लय, ध्वनि, रीति, व्यक्ति वैशिष्ट्य, आवृत्ति, शब्द शक्ति, पर्याय वक्रता, पदोचित्य आदि शैलीय उपकरणों द्वारा चतुर्वेदीजी की गद्य भाषा का बारीक परीक्षण इस अध्याय में किया गया है।

इसके बाद के नौ अध्यायों को मुख्यत: तीन भागों में बांट कर देखा जा सकता है। जिसके पहले भाग में साहित्यिक दृष्टि से एकदम अलग दो अध्याय हैं- 'समय का यथार्थ परिसर जीवन और हिंदी उपन्यास' और 'शैक्षणिक परिसर का सुनामी'। विश्वविद्यालयी राजनीति और परिसर जीवन के यथार्थ को उद्घाटित करते ये दो अध्याय इस पुस्तक को भीड़ से अलग खड़ा कर देते हैं। विश्वविद्यालयी जीवन और उसके अपने समय के यथार्थ से टकराव को जिस भी उपन्यास ने दर्ज किया उसका खुलासा यह अध्याय अपनी मुक्त आलोचना के साथ करता है। यहीं सत्यकेतुजी उपन्यास विधा के प्रति अपना लगाव प्रकट करते हुए कहते हैं कि 'जिंदगी में जो कुछ भी घटित होता है, वह चाहे कविता, नाटक या अन्य किसी साहित्यिक विधा की पकड़ से बच जाए, पर उपन्यास से बच निकलना संभव नहीं है। दरअसल, औपन्यासिक कलेवर ने तत्कालीन राजनीति के एक बड़े फलक को समेटते हुए लगभग हर समस्या से रूबरू होने की कोशिश की थी। फिर भी सत्यकेतुजी ने यह प्रमाण के साथ प्रस्तुत किया है कि परिसर जीवन की चर्चा सातवें दशक तक आनुषंगिक रूप में होती रही। प्रेमचंद के उपन्यासों तक में परिसर जीवन प्राय: गायब है, लेकिन यहीं सातवां दशक परिसर जीवन में विक्षोभकारी बदलाव लेकर आया और आठवें-नौवें दशक तक वह अपनी चरम तक पहुंच गया।

इसी संदर्भ में आलोचक ने 'राग दरबारी', 'अपना मोर्चा', 'कांच घर', 'गुरुकुल', 'परिशिष्ट', 'चक्रव्यूह', 'समर शेष है', 'दीक्षांत', 'कितने नीलकंठ' आदि उपन्यासों में परिसर जीवन पर आलोचनात्मक दृष्टि डाली है। परिसर जीवन से संबंधित इन उपन्यासों में कितना यथार्थ है या कितना भोंडा-सपाट अंकन है या बाहरी पक्ष के साथ-साथ इसने पात्रों की मानसिकता में कितना प्रवेश किया है, इसका मूल्यांकन ये अध्याय प्रस्तुत करते हैं। दरअसल, यह मूल्यांकन

आलोचक के अकादमकि अनुभव और आलोचनात्मक ववािक दोनों को दर्शाता है□

दूसरा खंड प्रेमचंद के पूरे साहत्यिकि संसार को तीन अध्यायों में बांटता है, जो □क संक्षप्ति लेकनि असरदार प्रयास है□ ये अध्याय प्रेमचंद के नबिंध, अनुवाद, पत्रकारति, नाटक, कहानी और उपन्यासों की रूपरेखा को भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के □क ब्योरे के रूप में पेश करते हैं□ वे प्रेमचंद के उस रूप को प्रतस्थिापति करने में भी सफल रहे हैं, जो राजनीतकि रूप से उतना ही प्रतबिद्ध रहा है जतिना कि सामाजकि रूप से□ वे प्रेमचंद के पात्रों के माध्यम से ही प्रेमचंद की उस मन:स्थतिि को उद्घाटति करते हैं कि 'यह अक्रमण्यता का समय नहीं है□ इस समय तटस्थ बैठे रहना अपने देशवासयिों पर घोर अत्याचार है□' इतना ही नहीं आजादी की जंग पर केंद्रति तत्कालीन कहानयिों का अतरिक्ति मूल्यांकन भी वे इसी के साथ करते हैं, जो इस तारतम्यता को कहीं अधकि यथार्थपरक बनाता है□

पुस्तक का तीसरा खंड उपन्यास और कहानी के वकिास की □क नई प□ताल है, जसिमें मधुरेश की पुस्तक 'हंदिी उपन्यास के वकिास' और 'हंदिी कहानी के वकिास' पर दो समीक्षात्मक लेख हैं□ यह लेख इस दृष्टि से भी उल्लेखनीय है कि यह इतहिास और वकिास के फर्क को बाकायदा जानता और दर्ज करता है□ इसी कारण आलोचक को यह कहने में जरा भी झझिक नहीं है कि 'ये पुस्तकें न 'इतहिास' हैं, न 'वकिास'□... ये 'इतहिास' लखिने और 'वकिास' दखिाने वाले आलोचकों के लि□ आधारभूत ग्रंथ बन सकती हैं□'

दरअसल, यह पुस्तक उपन्यास और कहानयिों की उनके समसामयकि संदर्भों में □क वस्तिृत प□ताल है, जो रचना और रचनाकार दोनों को यथार्थ की तुला पर तौलती हुई आगे ब□ती है□ इन वधिाओं के शल्पिगत परीक्षण से लेकर सामाजकि सरोकारों तक को जांचती है□ पुस्तक का अंतमि प□ाव भी जांच की इसी प्रक्रयिा में 'कहानी' और 'कथा' के शल्पिगत मूलभूत अंतरों को दर्शाते हु□ राहुल सांकृत्यायन और संजीव की कहानयिों में सामयकि यथार्थ को जांचता चलता है□ दरअसल, सत्यकेतु राहुलजी की कहानयिों को जहां □क दृष्टि में उपन्यासों का ही लघु रूप मानते हैं, वहीं संजीव की कहानयिों में उन्हें 'कथा' और 'कहानी' का घालमेल दखिाई प□ता है□

इस संदर्भ में वे लखिते हैं कि 'कहानी में रचना के केंद्र में कोई □क संवेदना या भाव या अनुभूति का □क क्षण होता है□ उसमें कथा का अंश नाममात्र का ही होता है□' यहीं वे 'कथा' की संभावति वशिषेता□ं भी स्पष्ट करते हैं- मसलन, कौतूहल पैदा करने के लि□ रहस्य सृष्टि, संयोगाधृत घटना□ं, रोमांच, रोमांस, नाटकीयता आदि□ इन शल्पिगत द्वंद्वों के बावजूद वे अपने मूल्यांकन द्वारा सद्धि करते हैं कि 'वोल्गा से गंगा', 'बहुरंगी मधुपुरी' और 'सतमी के बच्चे' राहुल सांकृत्यायन की समकालीन यथार्थ से संबद्ध मानवतावादी रचना□ं हैं□ इसी प्रकार संजीव भी 'समकालीन जीवन के अद्भुत चतिरे' हैं□ यह बात आलोचक ने संजीव की कहानयिों में कहीं गहरे उतर कर कही है□ संजीव की आदवािसी, नक्सलवादी, दलति संवेदना, अतपिछि□ और पूंजीवादी सभ्यता को आंख तरेरती कतिनी ही रचनाओं को केंद्र में रख कर सत्यकेतुजी इस नष्किर्ष पर पहुंचते हैं कि 'समाज की शायद ही कोई ऐसी समस्या हो, जसि पर संजीव की पैनी नगिाह न प□ी हो□'

कुल मलिा कर पुस्तक अपने पंद्रह अध्यायों में इसी प्रकार के सर्वेक्षणों से गुजरती है□ पुस्तक का हर अध्याय कसिी लेख या नबिंध से अधकि प्रस्तुत वषिय पर □क गहन शोध-सा लगता है□ शायद यही कारण है कि यह पुस्तक साहत्यि की बारीक से बारीक सूचनाओं, तथ्यों और संवेदनाओं को मापती-तौलती चलती है□

[illegible]- [illegible]: [illegible]; [illegible], 7/31, [illegible], [illegible], [illegible]; 350 [illegible]

फेसबुक पेज को लाइक करने के लिए क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लिए क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta